KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ECONOMICS, COMMERCE & BUSINESS MANAGEMENT
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJECBM/ JAN-MAR (2018)/VOL-5/ISS-1/A3 PAGE NO.8-10
ISSN: 2348-4969 IMPACT FACTOR (2017) – 7.8902
UGC APPROVED JOURNAL NO. 47663
WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

मुगल साम्राज्य का पतन और अठारहवीं शताब्दी सम्बन्धी वाद-विवाद : राजस्थान के विशेष सन्दर्भ में

[1]नरेश कुमार
[1]शोधार्थी, इतिहास विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

सारांश
भारतीय इतिहास में अठारहवीं शताब्दी का काल एक बहुत ही महत्वपूर्ण, जीवंत और कँपकँपी सी पैदा कर देने वाला विषय है जो अपने विरोधाभासितापूर्ण चरित्र को लेकर लम्बे समय से इतिहासकारों के बीच विवाद का विषय बना हुआ है। महान मुगल साम्राज्य जो लगभग 150 वर्षों से सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप पर प्रभावशाली ढंग से अपना नियन्त्रण स्थापित किए हुए था, का पतन अथवा राजनीतिक बिखराव इस शताब्दी की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना है। इस घटना ने इतिहासकारों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और उनके मध्य मुगल साम्राज्य के पतन के कारणों को लेकर एक बहस की शुरूआत हो गई। ये वो काल था जिसमें बहुत कुछ नष्ट हो रहा था तो बहुत कुछ निर्मित हो रहा था। बहुत कुछ विस्थापित हो रहा था तो बहुत कुछ प्रतिस्थापित हो रहा था। इसमें बहुत कुछ अच्छे के लिए घटित हो रहा था तो बहुत कुछ बुरे के लिए घटित हो रहा था। इसलिए ये शताब्दी इतिहासकारों के शोध के लिए एक स्वपनिल शताब्दी बनी हुई है। प्रस्तुत शोध पत्र में मुगल साम्राज्य के पतन और अठारहवीं शताब्दी सम्बन्धी वाद–विवाद को राजस्थान के विशेष सन्दर्भ में समझने का प्रयास किया गया है।

संकेत शब्द :- *अठारहवीं शताब्दी, मुगल साम्राज्य, जागीरदारी संकट, कृषि संकट, व्यापारिक पूँजी, जागीर, व्यापार और वाणिज्य*

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org